चिह्न विचार

विराम शब्द का अर्थ होता है ठहराव या अंत । बोलते या लिखते समय अनेक बार हल्के-फुल्के रुकना पड़ता है और जब अभिव्यक्ति पूर्ण हो जाती है तो बोलना या लिखना पूरी तरह रुक जाता है; पूरा ठहराव आ जाता है ।

इन बीच या अंत के ठहरावों-विरामों के सूचक विभिन्न संकेत-चिह्न प्रयोग में लाए जाते हैं जिन्हें विराम चिह्न कहा जाता है ।

परिभाषा के रूप में कहा जा सकता है कि - ''लिखित भाषा के वाक्यों के बीच या अंत के विभिन्न विरामों का बोध कराने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहा जाता है ।''

ये चिह्न तीन तरह के होते हैं - (i) वाक्य में विभिन्न विरामों का बोध करानेवाले (ii) वाक्यों के विविध भावों का बोध करानेवाले (iii) तीसरे प्रकार के चिह्न वे होते हैं जो विराम नहीं विवरण, उद्धरण संक्षेप, समास आदि के सूचक होते हैं ।

हिंदी में प्रचलित विराम चिह्न

(i) विराम चिह्न

1. अल्प विराम - ,
2. अर्द्ध विराम - ;
3. पूर्ण विराम - ।

(ii) भावबोधक चिह्न

4. प्रश्नवाचक - ?
5. संबोधन चिह्न - !
6. विस्मयवाचक - !

(iii) अन्य चिह्न

7. सामासिक चिह्न -
8. योजक -
9. उद्धरण चिह्न " "
10. एकल उद्धरण चिह्न ' '
11. छोटा कोष्ठक ( )
12. बड़ा कोष्ठक [ ]
13. काक पद ʌ
14. विवरण चिह्न (डैस) –
15. कोलन :

16. बिंदु
17. तारा या अंक * या 1, 2, 3 आदि ।
18. संक्षेप चिह्न (शून्य) ०

1. अल्प विराम (,)

(i) राम, मोहन और आसिफ पटना गए ।
(ii) अच्छा, मैं चलता हूँ ।
(iii) अरे, आपको तो बुखार है ।
(iv) प्रिय मित्र,
(v) मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार, पटना ।
(vi) लेकिन, आपको विशेष ध्यान रखना होगा ।

तात्पर्य यह कि अल्प विराम के चिह्न (जिसका नाम ही अल्प विराम है) उस हल्के ठहराव का बोध कराते हैं जो वाक्य पूरा होने के पूर्व का विराम होते हैं ।

(क) दो से अधिक पद, पदबंध या वाक्यांश एक वाक्य में क्रमशः प्रस्तुत हों तो उनके अंतिम के पूर्व 'और' लगता है और उससे पहले के सारे पद-पदबंध में अल्प विराम लगता है ।

(ख) अच्छा, अरे, जी हाँ, काश, शायद आदि अवधारकों का प्रयोग वाक्य के आरंभ में हो तो उनके बाद अल्पविराम अवश्य रहते हैं । जैसे - अच्छा, आप ही चलिए !

(ग) सन, संवत् आदि में तिथि या मास के उल्लेख के बाद ।

(घ) पत्र या आवेदन आदि में संबोधित पदनाम के बाद ।

(ङ) विभाग आदि के उल्लेख में - छोटी इकाई से क्रमशः वृद्धि की ओर बढ़ने के साथ प्रत्येक इकाई के बाद ।

2. अर्द्धविराम (;)

अर्द्धविराम उस वाक्य के पूर्ण होने के बाद लगता है जिसमें अभिव्यक्ति पूर्ण नहीं होने के कारण थोड़ा विराम लेकर अगला वाक्य शुरू किया जाता है ।

(क) सब तैयार हो चुका है; बस आपकी प्रतीक्षा हो रही है ।

(ख) आप समय पर और नियमित दवा लेते रहिए; सप्ताह भर में ज्वर को तो भागना ही है ।

3. पूर्ण विराम (।)

मोहन पढ़ता है । शरत्चंद चट्टोपाध्याय के उपन्यास 'देवदास' पर हिंदी में तीन फिल्मों का निर्माण हो चुका है । हाँ । जी हाँ । मैं करूँगा । उसमें डॉ० राजेन्द्र प्रसाद रहते थे ।

स्पष्ट है कि जहाँ अभिव्यक्ति पूर्ण हो जाती है वहाँ पूर्ण विराम लग जाता है । वाक्य बड़ा हो या छोटा इससे कोई अंतर नहीं पड़ता । कोई पूछता है कि आप एक महीने में यह पुस्तक तैयार करा दीजिएगा, और उत्तर देनेवाला मात्र 'हाँ' कहता है तो यहाँ 'हाँ' न केवल पूर्ण वाक्य तथा अभिव्यक्ति का द्योतन करता है बल्कि यह अर्थ भी व्यंजित कर देता है कि उसकी स्वीकृति पूर्ण निश्चयार्थक है ।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)

तुम मुझसे मिलोगे ?

आप आएँगे ?
आप पढ़ रहे हैं ?
क्या आप पढ़ रहे हैं ?
आप पढ़ रहे हैं क्या ?

स्पष्ट है कि जिस वाक्य का कथ्य या भाव प्रश्नात्मक (या जिज्ञासामूलक) हो उसके अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगता है ।

5. संबोधन चिह्न/विस्मयादिबोधक (!)

राम ! जरा इधर तो आओ ।
इतना बड़ा ! आज तक सुना भी नहीं ।
वाह ! आपने कमाल कर दिया ।
ओह ! पता नहीं ईश्वर क्या चाहता है ।
अहा ! आपके दर्शन तो हुए ।

संबोधन और विस्मय के साथ ही हर्ष, उल्लास, शोक, क्षोभ, घृणा आदि भावों को व्यक्त करने के लिए विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग होता है । इसका प्रयोग संबोधित संज्ञा के अलावा हर्ष-विषाद आदि भावों को व्यक्त करनेवाले 'अहा-अहो' आदि अव्ययों के तुरंत बाद होता है ।

वस्तुतः ये विस्मयादिबोधक अव्यय अपने मूल में संबोधन की ध्वनि छिपाए हुए हैं इसलिए इनमें संबोधन वाले चिह्न का ही प्रयोग होता है ।

संबोधन चिह्न की जगह अर्द्धविराम का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ अत्यंत निकट का मामला हो । बेटे, जरा पानी पिलाना !

यदि संबोधित व्यक्ति से संबोधक का कालगत या स्थानगत अंतराल ज्यादा हो तो निश्चय ही वहाँ संबोधन या विस्मय के अव्यय के बाद ही चिह्न (!) प्रयुक्त हो जाता है ।

कथा साहित्य में पात्रों की मनोदशा की विशिष्टता का बोध कराने के लिए कभी-कभार दो या तीन संबोधनवाचक चिह्नों का प्रयोग देखा जाता है ।

6. सामासिक चिह्न/योजक चिह्न - समास युक्त पद, पद आवृत्ति आदि में पदों को जोड़ने वाले की भूमिका में इस चिह्न का प्रयोग होता है । द्वंद्व समास में तथा तत्पुरुष की विभक्तियों का स्थानापन्न होने के कारण इस चिह्न को सामासिक या योजक चिह्न कहते हैं । यह पदों के ही बीच में आता है ।

ऐसा-वैसा, करते-करते, गुरु-शिष्य, जल्दी-जल्दी, दाना-पानी, देश-विदेश, भवन-निर्माण, गणेश-पूजा आदि ।

किसी पंक्ति के अंत में जब कोई शब्द पूरा नहीं लिखा जा सके तो उसके आगे योजक चिह्न (-) लगाकर नीचे की पंक्ति में बाकी आधा पद देकर पंक्ति प्रारंभ कर दी जाती है । जैसे-

"मोहन ने कहा था कि मूल निवा-
सियों का अध्ययन करना है ।

यदि ऐसी स्थिति योजक चिह्न युक्त सामासिक पद के साथ आती है तो जारी पंक्ति के अंतिम पदांश के साथ ही नीचे के उत्तरार्द्ध पद के पूर्व भी योजक दिया जाता है । जैसे -

"अध्यक्ष जी ने कहा कि साहित्य-
परिषद् स्थापित होनी चाहिए ।"

इसमें ऊपर की पंक्ति वाला चिह्न 'बाकी नीचे' का अर्थ देता है जबकि नीचे वाला पहले से समस्त पद का अंग है ही ।

7. उद्धरण चिह्न (" ")

(i) कबीर ने कहा था कि "नदिया एक घाट बहुतेरे ।"

(ii) प्रेमचंद ने लिखा है - "अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है ।"

'उद्धरण चिह्न' नाम से ही स्पष्ट होता है कि किसी के उदाहृत कथन के साथ लगकर यह बताता है कि यह कथन अपने मूल रूप में है ।

इस चिह्न में आरंभिक दोनों अल्प विराम जैसे चिह्न ऊपर की ओर (") होते हैं और बादवाले नीचे की ओर (") ।

8. एकल उद्धरण चिह्न (' ')

(i) 'गोदान' में प्रेमचंद ने लिखा है ।

(ii) उनका 'मना करना' लोगों को उत्तेजित कर गया ।

(iii) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', हरिवंशराय 'बच्चन', रामधारी सिंह 'दिनकर', सुदामा पांडेय 'धूमिल' ।

उपर्युक्त उदाहरणों से एकल उद्धरण चिह्न के प्रयोग का पता चलता है ।

(क) इस चिह्न का प्रयोग-क्षेत्र उद्धरण चिह्न से अधिक विस्तृत है ।

(ख) किसी पुस्तक, पत्रिका, अखबार या रचना के नाम या शीर्षक के साथ इसका प्रयोग होगा है ।

(ग) किसी क्रिया विशेष या वाक्य में प्रयुक्त पद विशेष की विशिष्टता बताने के लिए इस चिह्न का प्रयोग होता है ।

(घ) किसी व्यक्ति के नाम के साथ प्रचलित अलग से जुड़े उपनाम के साथ इसका प्रयोग होता है । इस चिह्न के साथ केवल उस उपनाम का प्रयोग उसके पूरे नाम का बोध करा देता है ।

वंशगत उपाधि के साथ इसके प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती । वह उपाधि मात्र एक पीढ़ी पुरानी हो तब भी नहीं । हरिवंश राय 'बच्चन' का बच्चन एकल उद्धरणचिह्न युक्त होता है परंतु अमिताभ बच्चन, अजिताभ बच्चन, या उनके भाई, बेटे, पुतोहू आदि किसी के नाम के साथ प्रयुक्त 'बच्चन' में इस चिह्न की आवश्यकता नहीं पड़ती ।

9. छोटा कोष्ठक ( )

(क) (१), (२), (३), (क), (ख) (i) (ii) आदि अलग-अलग विचार, खंड, अनुच्छेद आदि के निर्देश के लिए प्रारंभ में ।

(ख) 'वाक्य समाप्ति का बोध पूर्ण विराम (।) से होता है' ।

वाक्य के बीच किसी भी पद के साथ उसका संदर्भ, संकेत या अन्यार्थ बताने के लिए इस छोटे घेरे (छोटा कोष्ठक) का प्रयोग होता है ।

11. बड़ा कोष्ठक [ ]

भाषा में इसका प्रयोग न के बराबर मिलता है । शोध-संदर्भ आदि के निर्देश के लिए इसका प्रयोग कभी-कभार होता है । यदि छोटे कोष्ठक के बाहर वाले कथन को भी घेराबद्ध करने की आवश्यकता हो तो वहाँ इसका प्रयोग होता है । जैसे - 1947 ई० के भारतीय परिवेश में [जब पूरे देश में स्वतंत्रता आंदोलन चरम पर था (पटने में भी) तब] हर ओर उत्साह तथा उमंग का वास्तविक स्वरूप देखने को मिला था ।

12. काक पद या हंस पद - ʌ और

(i) इस व्याकरण की पुस्तक में भाषा ʌ रचना का पूरा परिचय मिल जाता है ।

यानी कहीं कोई पद या वर्ण लिखने से छूट या रह गया हो तो वहाँ यह चिह्न देकर ऊपर वह पद या वर्ण लिख दिया जाता है ।

13. विवरण चिह्न (-)

(क) विवरण चिह्न के रूप में इसके विकल्प में केवल कोलन (:) का व्यवहार अभी अधिक प्रचलन में है । जैसे - (i) द्रष्टव्य हैं - (ii) जैसे – (iii) प्रस्तुत है – (iv) का कथन है -

(ख) संवाद-निर्देश के लिए

चंपा – मेरे साथ बकवास मत करो !

जगदीश – तुम्हें यह बकवास लग रहा है ?

(ग) वाक्य के बाद में अतिरिक्त कथ्य, संदर्भ आदि की प्रस्तुति या निक्षेप के लिए – उन्होंने बताया कि दुलारचंद – अमरेश के पिता – एक पैसे का भी कर्जदार नहीं थे । ऐसी स्थिति में इसके विकल्प में छोटा कोष्ठक का भी प्रयोग होता है ।

(घ) चौथे प्रश्न का उत्तर (:) ; हिंदी के प्रमुख नाटककारों के नाम (:) ; विवरण निम्नलिखित हैं (:) ।

14. कोलन (:)

यह चिह्न भी डैश की भाँति, विवरणमूलक होता है । इसका संकेत होता है – 'आगे प्रस्तुत है', 'आगे देखें' आदि । जैसे -

(i) समाचारपत्रों के नाम : (ii) हिंदी के प्रमुख उपन्यास : (iii) वाक्य का विश्लेषण :

15. बिंदु (·)

यह चिह्न क्रमांक की पूर्णता का बोधक होता है । प्राय: क्रमांकों – 1, 2, 3, १, २, ३, क, ख, ग आदि को लोग छोटे कोष्ठक ( ) में घेर देते हैं या वैसा नहीं करने की स्थिति में अंक या अंकबोधक वर्ण के बाद निचले हिस्से में बिन्दु (.) दे देते हैं । जैसे – 1., 2.

17. संक्षेप चिह्न (०)

यह शून्य संक्षिप्तता का सूचक होता है । किसी शब्द को बार-बार दुहराना हो तो विस्तार से बचने के लिए उस शब्द के आरंभिक, एक-दो वर्ण देकर शून्य दे दिया जाता है । जैसे - ध्रुवस्वामिनी के लिए ध्रुव० आदि । इस संक्षिप्तिकरण की विशेष आवश्यकता कोशों में पड़ती है । उनमें संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, तत्सम, विशेषण आदि के लिए सं०, सर्व०, क्रि०, त०, वि० आदि का प्रयोग कर लिया जाता है ।

◆ ◆ ◆